समस्या का अंतिम हल माफी ही है, कर दो या मांग लो।
– अज्ञात

धरती पर जीवन से जुड़ी चिंता

यह रिपोर्ट बताती है कि मीठे पानी में पाई जाने वाली जैव प्रजातियों में 1970 से अब तक 84 प्रतिशत की कमी आ चुकी है। यानी 16 फीसदी ही बची हैं, बाकी दुनिया से विदा हो गई हैं।

नवीन शाह।।

हर दो साल पर जारी होने वाली लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट के नवीनतम संस्करण ने धरती पर जीवन से जुड़ी उन चिंताओं को और मजबूती से रेखांकित किया है जो हमारे नीति निर्माताओं को अबतक जरा भी प्रभावित नहीं कर पाई हैं। यह रिपोर्ट बताती है कि मीठे पानी में पाई जाने वाली जैव प्रजातियों में 1970 से अब तक 84 प्रतिशत की कमी आ चुकी है। यानी 16 फीसदी ही बची हैं, बाकी दुनिया से विदा हो गई हैं।

लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट वर्ल्ड वाइड फंड (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) फॉर नेचर और जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंडन द्वारा दो साल के प्रेक्षणों के आधार पर तैयार की जाती है और इसमें हर बार स्थिति पहले से बदतर ही होती नजर आती है। इस बार की रिपोर्ट में बताया गया है कि धरती पर स्थित 85 फीसदी वेटलैंड (छिछले पानी वाली गीली जगहें) गायब हो चुके हैं। भारत में स्थिति और ज्यादा बुरी है। यहां वेटलैंड कुल भौगोलिक क्षेत्र का महज 0.03 फीसदी ही बचा है। इसी प्रकार इंसानी दखल से मुक्त निर्जन इलाके भी तेजी से खत्म होते जा रहे हैं और भारत इस मामले में भी सबसे आगे है। रिपोर्ट में खुलकर कहा तो नहीं गया है, लेकिन रिपोर्ट में दिए गए मैप्स से साफ है कि भारत में निर्जन क्षेत्र जैसा कहीं कुछ बचा ही नहीं है।

मतलब यह कि मनुष्य की जरूरतें, उसकी सहूलियतें और सुख–सुविधाएं उसकी सोच पर इस कदर हावी हो गई हैं कि उसे अब यह अहसास भी नहीं होता कि उसके द्वारा संचालित परियोजनाएं तमाम जीव–जंतुओं का जीना मुश्किल बना रही हैं और इनके चलते बहुत सारी जीव जातियां अपना अस्तित्व खोती जा रही हैं। चाहे नदियों पर बनाए जाने वाले बड़े बांध हों या उनसे बड़े पैमाने पर निकाली जाने वाली रेत या फिर उनमें चलाए जाने वाले जहाज, ये उन जीवों के लिए घातक सिद्ध होते हैं जो कुछ समय पहले इनके किनारों पर या मझधार में सुरक्षित और सुकून भरा जीवन बिताते थे। तमाम जीव जातियों का नष्ट होना हमें विचलित इसलिए भी नहीं करता कि हम इसके दुष्प्रभावों की श्रृंखला से परिचित नहीं होते।

जानकार बताते हैं कि जैव विविधता बनी रहे तो हम विभिन्न घातक रोगाणुओं की ओर से निश्चिंत रह सकते हैं। प्रकृति इन जीवों को जरिया बनाकर कई विनाशकारी बीमारियों को हमसे दूर रखती है। लेकिन प्रजातियों के नष्ट होने से प्रतिरोध की वह दीवार टूटती है और कोरोना जैसे वायरसों के मनुष्य तक पहुंचकर कहर बरपा देने के आसार बढ़ जाते हैं।

इस महामारी ने पारिस्थितिकी संतुलन को लेकर हमारी चिंता बढ़ाई है, लेकिन जरूरत इस चिंता को उस जागरूकता का रूप देने की है, जिसका दबाव हमारे नीति निर्माताओं को अपनी प्राथमिकताओं में निर्णायक बदलाव लाने के लिए बाध्य कर सके।

इस संबंध में फिलहाल सबसे बड़ी दिक्कत यही है कि तमाम देशों की सरकारें अभी तक चीजों को पारिस्थितिकी असंतुलन संबंधी रिपोर्टों की रोशनी में देखने की आदी ही नहीं हुई हैं।

पुण्यलाभ

अशोक वोहरा।

यदि इस दुरूह यात्रा से बच गए तो पुण्यलाभ होगा, अन्यथा स्वर्गयात्रा का सुफल मिलेगा। श्रीअमरनाथ की वास्तविक यात्रा का जुलूस श्रीनगर से आरंभ होता है, जिसे 'छड़ी' कहते हैं। यूँ तो पैदल यात्रा का ही माहात्म्य है, किंतु कुछ लोग श्रीनगर से पहलगाम तक उनसठ मील का मार्ग मोटर या बस में तय करते हैं। आगे सत्ताईस मील के मार्ग में पैदल जाना पड़ता है। असमर्थ व्यक्तियों के लिए घोड़े और कंडियाँ भी मिल सकते हैं । यह यात्रा चार दिन में तय की जाती है। पहला पड़ाव चंदनवाड़ी है, जो पहलगाम से आठ मील है। यहाँ बर्फ का एक बहुत बड़ा पुल है। चंदनवाड़ी के समीप ही पिस्सू घाटी है, जहाँ रास्ता बहुत सँकरा है। एक ओर ऊँचे–ऊँचे पर्वत हैं तो दूसरी ओर नीची घाटी, जिसमें होकर नदी बहती है।

संपादकीय

कुदरत का बड़ा मंजर

हमने पूरे हिमालय को राजनीतिक दृष्टि से देखा है, या भोगने की दृष्टि से ही महत्व दिया है। हिमालय को आज एक गंभीर चिंतन की आवश्यकता है और यह चिंतन इसके संरक्षण से, स्थानीय लोगों के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं से जुड़ा है। यह उनसे भी जुड़ा है जो हिमालयी क्षेत्र के वासी न होते हुए भी हिमालय के जंगल, हवा, पानी का बड़ा लाभ उठाते हैं। यह तय है कि अगर हिमालय से जुड़ी चिंताओं यूं ही नजरअंदाज किया जाता रहा तो हम देश की इस सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक, पारिस्थितिकीय और आर्थिक महत्व की श्रृंखला को खो देंगे। यह सिर्फ हमारे देश की बात नहीं है। कम से कम 18 देशों का जीवन इस श्रृंखला से सीधे तौर पर जुड़ा है। वैसे देश के विकास में जरूरी समझे जाने वाले बांध स्थानीय रूप में विनाशकारी ही हैं पर हिमालय इन्हें झेलता है। इन सबके अलावा हिमालय हमारे लिए एक रक्षक के रूप में भी अपनी भूमिका निभाता है। उच्च हिमालय की दुर्गम पहाड़ियां हमारी ढाल का कार्य करती हैं। यह बहुत बड़ा रक्षा कवच है जो आज भी दुश्मनों का हम तक पहुंचना और हमारे लिए चुनौती खड़ी करना कठिन तो बना ही देता है। आध्यात्मिक दृष्टि से से भी हिमालय की सर्वोच्चता जगजाहिर है। देश के सबसे बड़े धाम ब्रदीनाथ, केदारनाथ इसी श्रृंखला का हिस्सा हैं। हिमालय में तमाम देवी–देवताओं का निवास माना जाता रहा है। साफ है कि इतनी महत्वपूर्ण श्रृंखला को समझने में हमसे चूक हुई है। इसके संरक्षण को लेकर हम कतई गंभीर नहीं हैं। कुदरत का जो बड़ा मंजर कहीं–कहीं बचा है, उनमें प्रमुख है हिमालय। इसलिए हिमालय है तो हम हैं।

मान लिया गया कि ये राज्य खुद हिमालय की रक्षा की जिम्मेदारी निभाएंगे। इस क्रम में हम भूल ही गए कि हिमालय के संसाधनों के बड़े हिस्से का लाभ देश के अन्य क्षेत्र भी उठाते हैं।

हिंदूकुश में सूखा

अनिल पी जोशी।।

हिमालय के प्रति केंद्र सरकार के दृष्टिकोण पर गौर करें तो वह असंतोष की प्रतिक्रिया में नया राज्य बना देने तक ही सीमित रहा है। देश में पड़ने वाले पूरे हिमालयी क्षेत्र को 10 अलग–अलग राज्यों का दर्जा देकर सरकार ने अपने दायित्वों से मुक्ति पा ली। मान लिया गया कि ये राज्य खुद हिमालय की रक्षा की जिम्मेदारी निभाएंगे। इस क्रम में हम भूल ही गए कि हिमालय के संसाधनों के बड़े हिस्से का लाभ देश के अन्य क्षेत्र भी उठाते हैं। हिमालय के स्थानीय राज्यों के खाते में आने वाला लाभ करीब 10 फीसदी ही होता है। इसलिए हिमालय की चिंता करना सबका दायित्व होना चाहिए। हिमालय के हालात की आज समीक्षा की जाए तो कई गंभीर सवाल सामने आ जाते हैं। सबसे बड़ी बात तो यही है कि हमारे पास पूरे हिमालय क्षेत्र के संसाधनों से संदर्भित कोई स्टेटस रिपोर्ट नहीं है।

हमने हिमालय के विकास के लिए जो मापदंड तैयार किए वे उसी रुटीन के अंतर्गत थे जो मैदानी क्षेत्रों के लिए तय किए गए थे– सड़कों का जाल बिछाना, नए–नए उद्योग लगाना, बड़ी परियोजनाएं शुरू करना। यह समझना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हिमालय के हालात को आज हम अच्छे दर्जे में नहीं रख सकते। आज

इस तर्ज पर भी सोचने की जरूरत है कि अगर हिमालय नहीं होता तो उसके क्या परिणाम हो सकते थे। पहला बड़ा असर शायद पूरे हिंदूकुश क्षेत्र में बहुत बड़े सूखे के रूप में पड़ा होता। मानसून देश में दक्षिण भारत से चलते हुए उत्तर भारत में मात्र हिमालय के कारण ही वर्षा देता है। हिमालय मानसूनी हवाओं के जल से पूरे देश को सींचता है और यही जल हिमखंडों का भी निर्माण करता है। ये हिमखंड ही हैं जो हिमनदियों का रूप धारण करके आगे बढ़ते हुए इस पूरे क्षेत्र में जीवन को संबल देते हैं। हरित क्रांति जैसी देश की आर्थिक सूरत बदलने वाली क्रांतियां भी इसी बदौलत संभव हुईं।

सीधे शब्दों में कहा जाए तो अगर हिमालय नहीं होता तो देश के उस पार वर्षा होती और यह पूरा क्षेत्र जल विहीन होता। यानी 3 लाख 50 हजार वर्ग किमी का यह क्षेत्र बंजर ही होता। मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य एक प्राकृतिक अवरोध की तरह खड़ा है हिमालय, जो हमें शीतकालीन शुष्क और सर्द हवाओं से भी बचाता है। हिमालय नहीं होता तो हम बढ़ते प्रदूषण के कारण बड़े पर्यावरणीय संकट से घिर जाते। कार्बन डाईऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावों से हमें बचाने में हिमालय के वनों का बहुत बड़ा हाथ है।

हिमालय देश का बहुत बड़ा बायो डायवर्सिटी स्पॉट भी है। दुनिया के जैव विविधता वाले 34 हॉट स्पॉट हिमालय में हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यहां विभिन्न तरह की प्रजातियां हैं, चाहे वे खेती–बाड़ी से जुडी हों या वनों से या तमाम तरह के जीवों से। हिमालय ऐसी प्रजातियों का सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह भी हमारे संज्ञान में होना चाहिए कि आज दुनिया भर में जितनी भी तरह की फसलें या सब्जियां हम खाते हैं उनका बहुत बड़ा जैविक केंद्र हिमालय ही है। दुनिया की लगभग 6 फीसदी जैव विविधताएं हिमालय से जुड़ी हैं। भोजन के काम आने वाली विभिन्न तरह की प्रजातियां हिमालय की ही देन हैं। इतना ही नहीं, हिमालय की विभिन्न प्रजातियां एक और बड़े योगदान से जुड़ी हैं। वह है इसकी जेनेटिक वेल्थ।

सूडोकु नवताल-5472

सरल

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5471 का हल

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8

अपना ब्लॉग

आर्थिकी और पारिस्थितिकी के नियंत्रण में

मोहन। विभिन्न प्रजातियों की जेनेटिक संरचना देश में कई तरह की संकर प्रजातियों को बनाने में बहुत बड़ा योगदान करती है। अपने देश में हिमालयी क्षेत्र संवहनी पौधों की 8000 से अधिक प्रजातियों का घर है, जिनमें से 1748 औषधीय गुण वाले पौधे हैं।

देश की नदियों को देखें तो 19 बड़ी और 70 से ज्यादा छोटी नदियां पूरे हिमालय क्षेत्र से निकलती हैं, चाहें वे तीस्ता, ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना हों या जम्मू–कश्मीर से जुड़ी हुई झेलम, चनाब जैसी नदियां हों। ये पूरे देश को पालती हैं। भले इनका छोटा ही हिस्सा स्थानीय रूप से कहीं प्रयोग में आता हो लेकिन देश की आर्थिकी और पारिस्थितिकी के नियंत्रण में इनकी बड़ी भूमिका है। इनसे जुड़े 9000 हिमखंड हैं जो इन्हें पानी मुहैया कराते हैं। वे देश के लिए भी जल डिपॉजिट हैं। साथ में सैकड़ों बांध जो हिमालय को भेदते हैं वे इन्हीं नदियों पर बने हैं।